MODEL PAPER

कक्षा – XII

अर्थशास्त्र (वाणिज्य) - Economics (Commerce)

set – 4

खण्ड– II (section - II)

Short Answer type Question

लधु उत्तरीय प्रश्न 10x3 = 30

निर्देश : प्रश्न संख्या 1 से 10 तक लधु उत्तरीय प्रश्न है तथा प्रत्येक के लिए के लिए 3 अंक निर्धारित है।

Instructions : For Questions Nos. 1 to 10 are short answer type and each question carries 3 mark .

Q.(1) How does the increase in income affect demand curve for inferior good ?

घटिया वस्तुओं के लिए आय में वृद्धि मॉंग वक्र को कैसे प्रभावित करती है ?

Ans:- Inferior goods are the goods which are consumed by a consumer due to insufficient level of income e.g. , Coarse grains, vegetable, ghee etc. In this case as the income of consumer increases, he reduces consumption of inferior goods and increases consumption of superior goods or we can say, income demand curve for inferior goods is negatively sloped and falls from left to right. DD curve indicates income demand curse for inferior goods. At OY level of income, demand of inferior goods decreases to OQ, and shift to the consumption of superior goods.

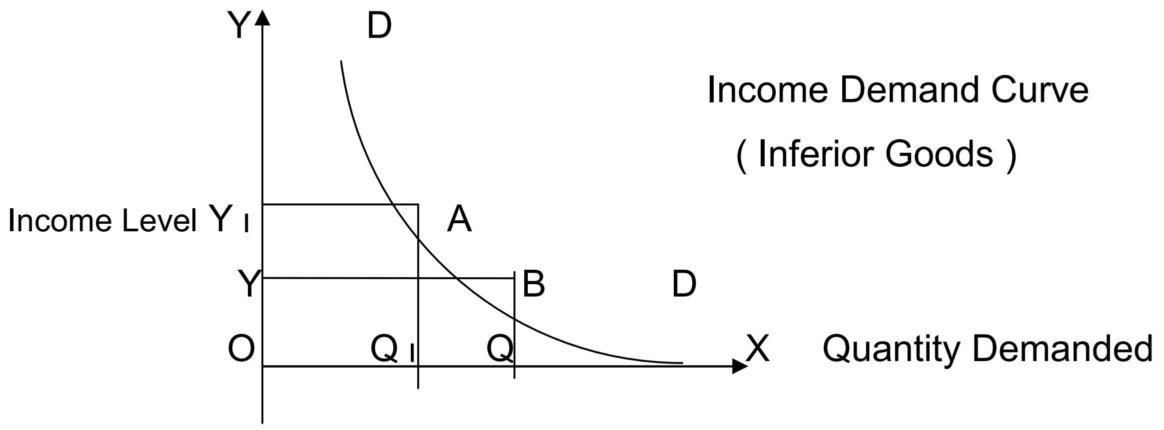

घटिया वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जिन्हें उपभोक्ता हीन दृष्टि से देखते हैं और आय स्तर के प्रयाप्त न होने पर उपभोग करता है जैसे – मोटा अनाज, वनस्पति घी, मोटा कपडा आदि ऐसी दशा में जैसे–जैसे उभोक्ता की आय में वृद्धि होती है वैसे–वैसे उपभोक्ता इन घटिया वस्तुओं का उपयोग घटा कर श्रेष्ठ वस्तुओं का उपभोग में वृद्धि करने लगता है अर्थात्

घटिया वस्तुओं के लिए आय माँग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला बाएँ से दायें नीचे गिरता हुआ होता है जैसे संलग्न चित्र में है प्रदर्शित किया गया है।

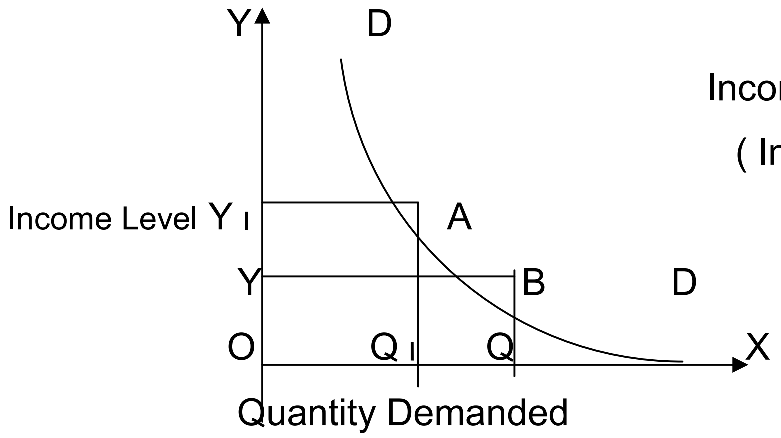

Income Demand Curve
(Inferior Goods)

DD वक्र घटिया वस्तुओं के लिए आये माँग को बताता है। आय के OY स्तर पर घटिया वस्तु की माँग OQ है। आय स्तर में OY। तक वृद्धि होने पर उपभोक्ता घटिया वस्तु की माँग OQ से घटाकर OQ। कर देता है अर्थात् वह श्रेष्ठ वस्तु का उपभोग अधिक आरम्भ कर देता है।

Q.(2) Explain the difference between an inferior and a normal good.

निम्न वस्तु तथा सामान्य वस्तु में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

Ans:- Normal Goods :- Normal goods are those goods for which the demand rises with every increase in the income of the consumer. In other words, in case of normal goods, there is a direct relationship between income of a consumer and his demand for normal goods, e.g. , the demand for rice and wheat will increase with every increase in income. Thus, rice and wheat are normal goods.

Inferior Goods :- Inferior goods are low quality products and their demand decreases when the income of the consumer increases and vice versa. In other words, in case of inferior goods, there is an inverse relationship between demand and income of the consumer, e.g. , the demand for peanuts or bajra will fall with the rise in the Income of the consumer. Hence, peanuts and bajra become inferior goods at a higher level of income.

सामान्य वस्तु – समान्य वस्तुएँ वह वस्तुएँ हैं जिनमें किमत एवं माँगी गई मात्रा में घनात्मक संबंध होता है। श्रेष्ठ वस्तुओं के सम्बन्ध में आये माँग वक्र घनात्मक ढाल वाला होता है अर्थात बायें से दायें उपर चढता हुआ होता है। श्रेष्ठ वस्तुओं का घनात्मक ढाल वाला आय माँग वक्र यह बताता है कि उपभोक्ता की आय में प्रत्येक वृद्धि उसकी

माँग में भी वृद्धि करती है तथा इसके विपरित आय की प्रत्येक कमी समान्य दशाओं में माँग में भी कमी उत्पन्न करती है।

घटिया वस्तु – घटिया वस्तुएँ वह वस्तएँ होती है जिन्हें उपभोक्ता हीन दृष्टि से देखता है और आय स्तर के प्रर्याप्त न होने पर उभोग करता है। जैसे– मोटा आनाज, वनस्पति घी, मोटा कपडा आदि। ऐसी दशा में जैसे–जैसे उपभोक्ता की आय में वृद्धि होती है, वैसे–वैसे उपभोक्ता इन घटिया वस्तुओं का उपयोग घटाकर श्रेष्ठ वस्तुओं के उपभोग में वृद्धि करने लगता है अर्थात् घटिया वस्तुओं के लिए आय माँग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला बायें से दायें नीचे गिरता हुआ होता है।

Q.(3) What is Law of supply ? Explain it with example and diagram.

पूर्ति का नियम क्या है ? इसे उदाहरण तथा रेखाचित्र से समझाईए।

Ans:- Producer always wants to sell his commodity at a higher price for maximising his profit. In other words, other things being equal, more is supplied at higher price and less at a lower price. Thus, price of commodity and its supply are positively related. In Functional form,

S =F(P)

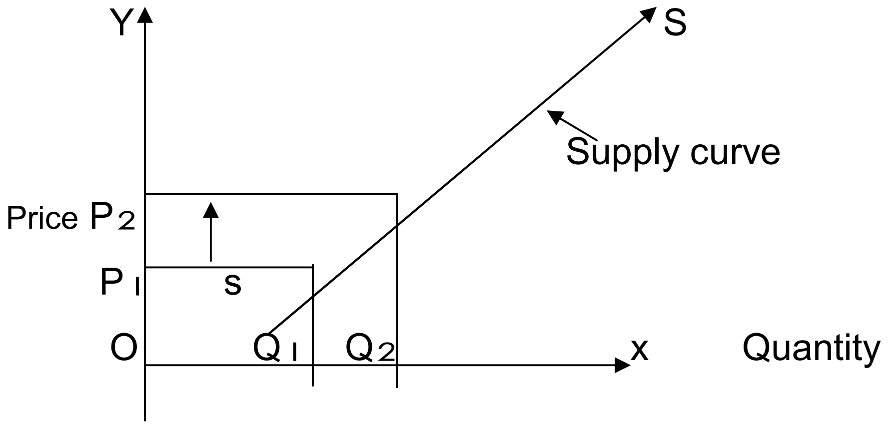

Where S refers to supply of the commodity and P for price.

Thus, supply function of a commodity represents a direct relationship between supply of commodity and its price. The law of supply states that other things remaining constant, the higher the price, the greater the quantity supplied or lower the price, the smaller the quantity supplied.

Or

Law of supply states the positive relationship between price of the commodity and its supply. That is the reason why supply curve slopes upward from left to

right.

उत्पादक सदैव अपने लाभ को अधिकतम करने के उद्धेश्य से अपनी वस्तु को दी गयी लागत दशाओं में ऊँची–से ऊँची कीमत पर बेचना चाहता है। दुसरे शब्दों में, अन्य बातें समान रहने पर, वस्तु की कीमत वृद्धि पूर्ति को बढायेगी तथा वस्तु कीमत में कमी पूर्ति को घटायेगी । इस प्रकार वस्तु कीमत तथा वस्तु पूर्ति में प्रत्यक्ष तथा सीधा संबंघ पाया जाता है।

फलन के रूप में

S =F(P)

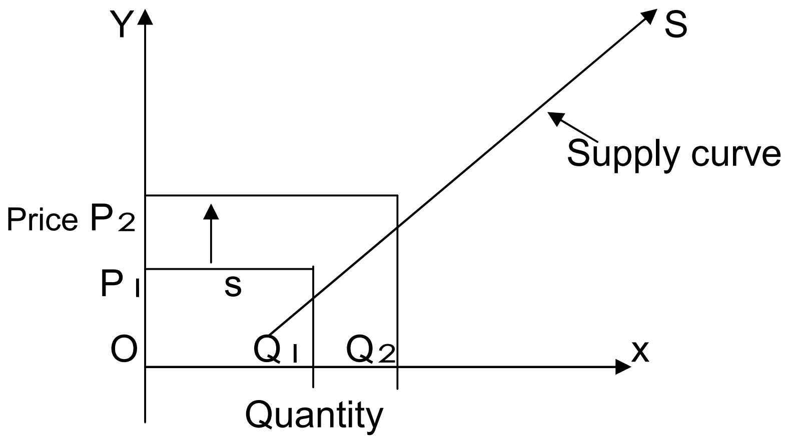

जहाँ S वस्तु की पूर्ति तथा P वस्तु की कीमत है। वस्तु का पूर्ति फलन, वस्तु पूर्ति तथा उसकी कीमत के मध्य सीधा सम्बन्ध स्पष्ट करता है।

इस प्रकार , पूर्ति का नियम यह बताता है कि अन्य बातें समान रहने पर जितनी कीमत अधिक होती है या जितनी कीमत कम होती है उतनी ही पूर्ति कम होती है। अर्थात पूर्ति का नियम वस्तु की कीमत एवं उसकी पूर्ति क बीच धनात्मक सम्बन्ध बताता है।

Q. (4) Firm is a price maker in monopoly.Explain.

एकाधिकार में फर्म कीमत निर्धारक होती है। स्पष्ट कीजिए।

Ans:- In monopoly , there is single producer in the market and entry of new firm is strictly prohibited. In this market situation , there is no distinction between firm and industry , i.e , firm is industry and industry is firm . In monopoly , the demand curve is negatively sloped . Like a compertitive firm , a monopolist is not price – taker but is price – maker . but a monopolist can not

decide both price and quantity simultaneously. If he wants to increase The sale , he has to Curtail down the price. In monopoly market ,

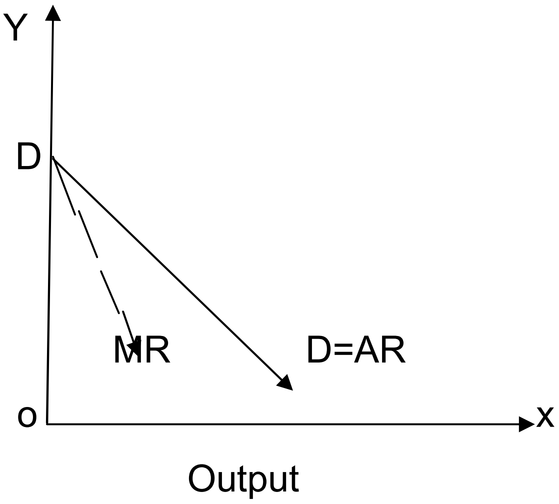

Marginal Revenue < Average Revenue

MR < AR

because in monopoly

$$MR = AR \left(\frac{e - I}{e} \right)$$

or

$$AR = MR \left(\frac{e}{e - I} \right)$$

Thus , the relation between AR and MR depends on the elasticity of demand. Above picture shows the AR and MR curves . Both AR and MR fall but MR is less then AR .

एकाधिकार में फर्म ‘कीमत निर्धारक हाती है।

(Firm is ‘ price maker in Monopoly) - एकाधिकार में एकमात्र उत्पादक एवं विक्रेता होने के कारण तथा निकट स्थानापन्न के अभाव के कारण उघोग में अन्य फर्मो के प्रवेश पर कड.ा प्रतिबन्ध होता है। दूसरे शब्दों में एकाधिकार में फर्म और उघोग में

कोई अन्तर नहीं होता , फर्म ही उघोग है तथा उघोग ही फर्म है (Firm is industry and industry is firm),एकाधिकार में मांग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला होता है। पूर्ण–प्रतियोगिता

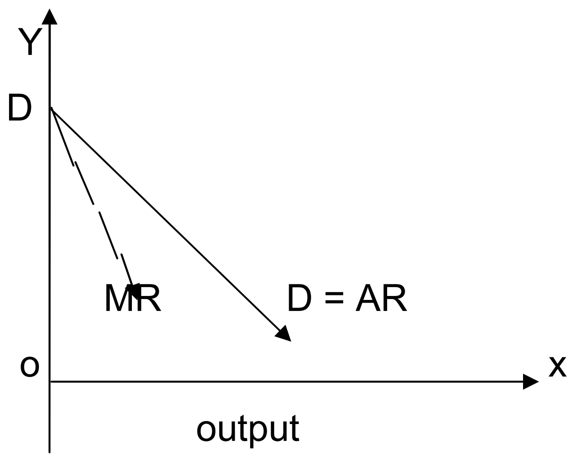

के उत्पादक की भॉंती एकाधिकारी कीमत प्राप्तकर्ता (Price taker) नहीं होता बल्कि कीमत निर्धारक (Price maker) होता है किन्तु एकाधिकारी किसी वस्तु की कीमत तथा उस वस्तु की पूर्ति दोनों को एक साथ नियन्जित नहीं कर सकता। यदि वह विक्रय को बढाना चाहता है तो उसे कीमत कम करनी पडेगी। एकाधिकारी के लिए सीमान्त आगम कम होता है और औसत आगम से (MR < AR) क्योंकि एकाधिकार में –

$$MR = AR \left(\frac{e - l}{e} \right)$$

अथवा $$AR = MR \left(\frac{e}{e - l} \right)$$

जहॉं e = मॉंग की लोच

इस प्रकार एकाधिकार में AR तथा MR वक्र प्रदर्शित किये गये हैं। दोंनों AR तथा MR वक्र नीचे गिरते हैं किन्तु MR कम होता है AR से।

Q.(5) Distinguish between stock and flow and give two examples for each.

स्टॉक तथा प्रवाह में भेद कीजिए तथा दो–दो उदाहरण दीजिए।

Ans:- Difference between stock and flow :-

Stock	Flow
(1) Stock means that quantity of an Economic variable which is measured at a particular point of time.	(1) Flow is that quantity of an economic Variable which is measured during the Period of time.
(2)Stock has no time dimension.	(2) Flow has time dimension as per hour, Per day, per month and per year.
(3)Stock is a static concept.	(3) Flow is a dynamic concept.
(4) Example : (a)Quantity of money (b)Wealth (c)The Amount of wheat stored (d) Water in a reservoir.	(4) examples : (a) Consumption (b) Investment (c) Income (d) water in a river.

उत्तर– स्टॉक एवं प्रवाह में अन्तर (Difference between Stock and Flow)

स्टॉक (Stock)	प्रवाह (Flow)
(1)स्टॉक का अर्थ किसी एक विशेष समय बिन्दु पर मापी जाने वाली आर्थिक चर की मात्रा है।	(1) प्रवाह का अर्थ एक आर्थिक चर की वह मात्रा है जिसे किसी समय अवधि के दौरान मापा जाता है।
(2) स्टॉक का कोई समय परिमाप नहीं होता।	(2) प्रवाह का समय परिमाप होता है जैसे प्रति घंटा, प्रति दिन, प्रति माह तथा प्रति वर्ष।
(3) स्टॉक एक स्थैतिक अवधारणा है।	(3) प्रवाह एक गत्यात्मक अवधारणा है।
(4) उदाहरण – (a) मुद्रा का परिमाप (b) घन (c) गोदाम में रखे गेहूँ की मात्रा (d) टंकी में रखा पानी	(4) उदाहरण – (a) उपभोग (b) निवेश (c) आय (d) नदी में जल

Q.(6) Explain the “Micro and Macro” Level of economic activity.

आर्थिक क्रिया के व्यष्टि एवं समष्टि स्तर समझाएँ।

Ans:- Micro Economics – It studies the economic activities of individual unit like individual form, individual household and individual industries.

Macro Economics – It is associated with the study of groups at entire economy level, For example aggregate demand and aggregate supply of all goods and services and entire economy level, national income.national saving, national investment, total employment, total production.

व्यष्टि अर्थशास्त्र – व्यक्तिगत इकाइयों (जैसे व्यक्तिगत गृहस्थ, व्यक्तिगत उघोग अथवा व्यक्तिगत बाजार की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है।

समष्टि अर्थशास्त्र – सम्पूर्ण कार्य व्यवस्था के स्तर पर समूहों के अध्ययन से सम्बन्धित है। जैसे – अर्थव्यवस्था में सभी वस्तुओं तथा सेवाओं की सामूहिक पूर्ति राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय बचत, राष्ट्रीय विनियोग, कुल रोजगार, कुल उत्पादन ।

Q.(7) Mention the meaning and characteristics of utilities.

उपयोगिता का अर्थ एवं उसकी विशेषताएँ बताएँ।

Ans:- Utility means – The capacity of a commodity to satisfy a particular want of consumer. Every commodity has some inherent want satisfying capacity.

Characteristics of utility :

(1) Utility is a psychological phenol menon. It depends upon the mental status of the consumer.

(2) Utility is subjective which differs from person to person. Utility of a particular goods is not same for all consumers.

(3) Utility is a relative concept because it changes from time and place.

(4) Utility is related the expected satisfaction and not from actual realized satisfaction because expected satisfaction depends upon intensity of consumption.

वस्तु विशेष में किसी उपभोक्ता की आवश्यकता विशेष की सन्तुष्टि की निहित क्षमता अथवा शक्ति का नाम उपयोगिता है। प्रत्येक वस्तु में कोई न कोई ऐसी विशेषता

अवश्य निहित रहती है, जिसके कारण उपभोक्ता उसकी माँग करता है। उपयोगिता की विशेषताएँ निम्नलिखित है –

(1) उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक धारणा है, जो उपयोगिता की दशा पर निर्भर करता है।

(2) उपयोगिता व्यक्तिपरक होती है जो विभिन्न व्यक्तियों के लिए भिन्न–भिन्न होती है

(3) उपयोगिता का विचार सापेक्षिक है क्योंकि उपयोगिता समय और स्थान के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

(4) उपयोगिता का अर्थ अनुमानित संतुष्टि से लिया जाता है न कि वास्तविक संतुष्टि से क्योंकि अनुमानित संतुष्टि उपयोग की तीव्रता पर निर्भर है।

Q.(8) Mention the features of perfect competition.

पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताओं को बताएँ।

Ans :- Characteristics of Perfect competition :-

(1) Large Number of Buyers and sellers,

(2)Homogeneous product,

(3) Free Entry and Exit of Firms,

(4) Perfect Knowledge of the Market,

(5) Perfect Mobility of Factor,

(6) No Transportation cost.

उत्तर :– पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ –

(1)क्रेता और विक्रेताओं की अधिक संख्या

(2)वस्तुओं की समरूप इकाईयाँ

(3)फर्मों के प्रवेश व निष्कासन की स्वतंत्रता

(4)बाजार की दशाओं का पूर्ण ज्ञान

(5)साधनों की पूर्ण गतिशीलता

(6) कोई यातायात लागत नहीं।

Q.(9) What is meant by Balance of Payment ?

भुगतान संतुलन से क्या अभिप्राय है ?

Ans:- Balance of Payment refers to the statement of accounts recording all economic transactions of a given country, it receives payments from and makes payments to

other countries. Balance of payments is a statement of accounts of these receipts and payments.

In other words Balance of Payment is overall records of all economic transactions of a country in a given period, with rest of the world.

भुगतान शेष का संबंध किसी देश के शेष विश्व के साथ हुए सभी आर्थिक लेन–देन के लेखांकन के रिकार्ड से है। प्रत्येक देश विश्व के अन्य देशों के साथ आर्थिक लेन–देन करता है। इस लेन देन के फलस्वरूप उसे अन्य देशों से प्राप्तियाँ प्राप्त होती हैं तथा उसे अन्य देशों को भुगतान भी करनी पडती है। भुगतान शेष इन्हीं प्राप्तियों एवं भुगतानों का विवरण पत्र होता है। दूसरे शब्दों में, किसी देश का भुगतान शेष किसी दिए हुए समय में सम्पुर्ण विश्व के साथ उसके लेन–देन का लखा–जोखा होता है।

Q.(10) What is meant by revenue deficit ? What are its effects ?

राजस्व घाटा क्या है ? इसके क्या प्रभाव होते हैं।

Ans:- Revenue deficit is the excess of revenue expenditures over revenue receipts. Revenue reciepts include both tax revenue and non-tax revenue.Similarly revenue expenditures also include both plan and non-plan expenditure on revenue account .Revenue deficit does not include items of capital receipts and capital expenditures.While revenue deficit creates liability for the government or reduces its assets.

राजस्व व्यय और राजस्व आय के अंतर को राजस्व घाटा कहते हैं। राजस्व प्राप्तियों में कर राजस्व और गैर कर राजस्व दोनों को ही सम्मिलित किया जाता है। इसी प्रकार राजस्व व्यय में राजस्व खाते पर योजना व्यय और गैर योजना व्यय दोनों को ही सम्मिलित किया जाता है।राजस्व घाटे में पूँजीगत प्राप्तियों एवं पूंजीगत व्यय की मदें सम्मिलित नहीं होती।

राजस्व घाटे के परिणास्वरूप या तो सरकार के दायित्व में वृद्धि हो जाती है अथवा इसकी परिसम्पत्ति में कमी आ जाती है।

MODEL PAPER

कक्षा – XII

अर्थशास्त्र (वाणिज्य) Economics (Commerce)

set – 4

खण्ड– III (section –III)

Long Answer type Question

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 5x6 = 30

निर्देश : प्रश्न संख्या 11से15 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न है तथा प्रत्येक के लिए के लिए 6 अंक निर्धारित है।

Instructions : For Questions Nos. 11 to 15 are Long answer type and each question carries 6 mark .

Q.(11) Mention the uses of Demand and supply in price determination of goods.

वस्तु कीमत निर्धारण में मॉंग एवं पूर्ति वक्रों के उपयोग को लिखें।

Ans:- Demand and supply are two important forces which play dominant role in price determination.

In the market, the price of the commodity is determined at a point. Where

(Demand for commodity = Supply of commodity)

The price at which demand for and supply of the commodity becomes equal is termed as 'equilibrium price'. In other words, equilibrium price refers to that price at which buyer (i.e. , demand side) is ready to buy and the seller (i.e. ,supply side) is ready to sell. Buyers demand the commodity due to its utility while the seller sells it for earning profit.

In the words of Marshall, " The equilibrium price is the price at which the quantity of goods which the sellers are willing to offer is equal to the quantity which the buyers want to purchase."

Demand for commodity – The demand for the commodity is made by the buyer because of its utility. In practice, the demand for the commodity is governed by the 'Law of Demand' i.e. , higher demand by the consumer at lower price and less demand at higher price. Thus consumer's Demand curve DD slopes downward from left to right.

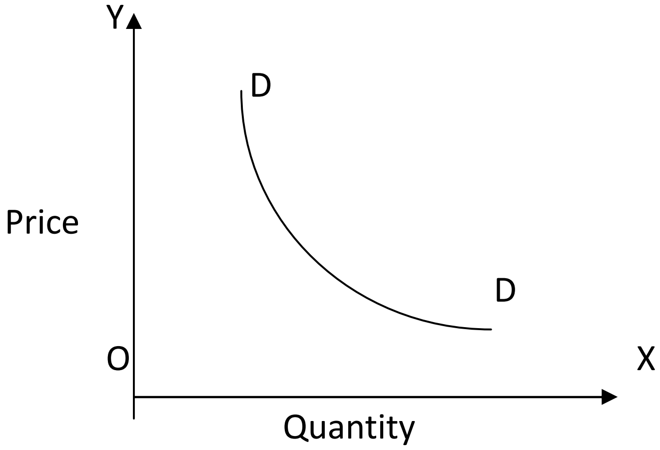

Suppy of commodity – Supply of the commodity is made by the seller because seller wants to earn profit by selling the commodities.In paractise,the supply of the commodity is governed by the 'Law of supply ' i.e. , more quantity at lower price. Thus the supply curve of the commodity slopes upward from left to right which states the direct relationship between price and quantity supplied. Commodity price : Demand supply Equilibrium : Buyer

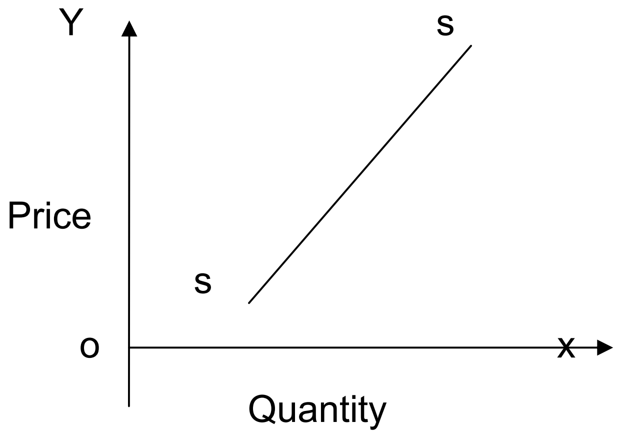

Wants to give the least price while the seller wants to take the maximum price of the commodity. Bargaining takes place between both the parts and at last, the price of the commodity is determined at the price where both for and supply of the commodity become equal . This price is called equilibrium price.

In following fig. price determination of the commodity by demand and supply forces has been shown . supply curve SS cut each other at point E where price OP is determined. This price OP (or EQ) shows the equilibrium price.

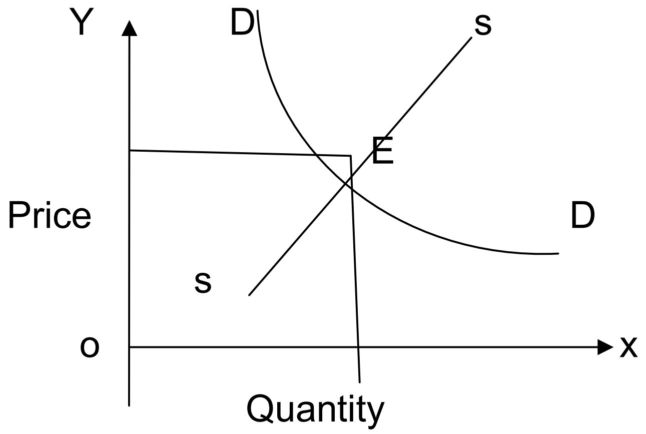

किसी वस्तु के कीमत निर्धारण में माँग एवं पूर्ति दो महत्वपूर्ण शक्तियाँ हैं। बाजार में किसी वस्तु की कीमत उस बिन्दु पर निर्धारित होती है जहाँ वस्तु की माँग = वस्तु की पूर्ति जिस कीमत पर वस्तु की माँग तथा पूर्ति बराबर हो जाती है, वह कीमत 'सन्तुलन या साम्य कीमत' कहलाती है। दुसरे शब्द में, 'साम्य कीमत' या सन्तुलन कीमत वह कीमत होती है, जिस पर क्रेता (माँग पक्ष) वस्तु खरीदने को तैयार होता है तथा विक्रेता (पूर्वी पक्ष) वस्तु बेचने को तैयार होता है। क्रेता वस्तु की माँग की उपयोगिता के कारण करते हैं जबकि विक्रेता वस्तु को लाभ कमाने के लिए बेचते हैं।

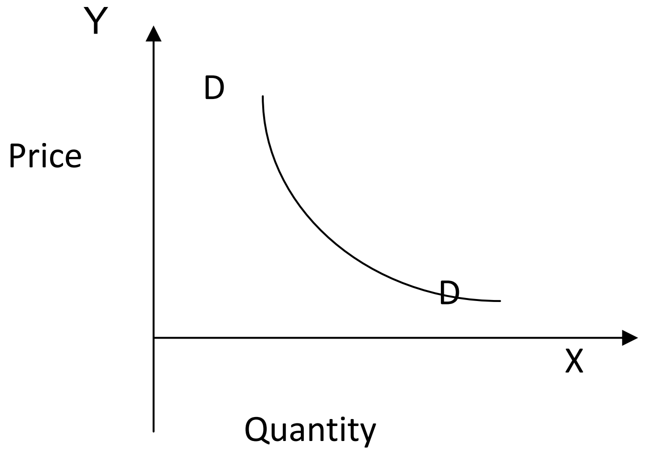

मार्शल के शब्दों में , ''सन्तुलन कीमत वह कीमत है जिसपर किसी वस्तु की मात्रा, जिसे विक्रेता बेचने को इच्छुक है, उस मात्रा के बराबर होती है जिसे क्रेता खरीदना चाहते है।

वस्तु की माँग (Demand for commodity) – वस्तु की माँग केता द्वारा की जाती है, क्योंकि वस्तु में उपयोगिता होती है वस्तु की माँग वस्तुतः माँग के नियम (Law of Demand) द्वारा नियंत्रित होती है अर्थात् उँची कीमत पर उपभोक्ता कम वस्तु मात्रा की माँग करता है, जबकि कम कीमत पर उपभोक्ता की यह माँग बढ जाती है। इस प्रकार उभोक्ता अथवा केता का माँग वक्र DD चित्र के अनुसार बायें से दायें नीचे गिरता हुआ होता है।

वस्तु की पूर्ति (Supply of commodity) – वस्तु की पूर्ति विक्रेता द्वारा की जाती है क्योंकि उत्पादक (या विक्रेता) वस्तु बेचकर लाभ अर्जित करना चाहता है। वस्तु की पूर्ति वस्तुतः पूर्ति के नियम द्वारा नियंत्रित होती है अर्थातः विक्रता कम कीमत पर वस्तु की कम पूर्ति तथा उसी कीमत पर वस्तु की अधिक पूर्ति प्रस्तुत करने का इच्छुक होता है इस प्रकार वस्तु की कीमत तथा पूर्ति मात्रा के बीच सीधा सम्बन्ध होने के कारण पूर्ति वक्र बायें से दायें उपर की ओर बढता है।

वस्तु कीमतः माँग–पूर्ति साम्य (Commodity Demand-supply Equilibrium) – प्रत्येक वस्तु की कम से कम कीमत देना चाहता है तथा विक्रेता वस्तु की अधिक से अधिक कीमत प्राप्त करना चाहता है। अतः दोनो पक्ष सौदेबाजी करते हैं और अंत में वस्तु की कीमत उस बिन्दु (जिसे साम्य अथवा संतुलन बिन्दु कहते हैं।) पर निर्धारित होती है जहाँ वस्तु की माँग वस्तु की पूर्ति के ठीक बराबर होती है।

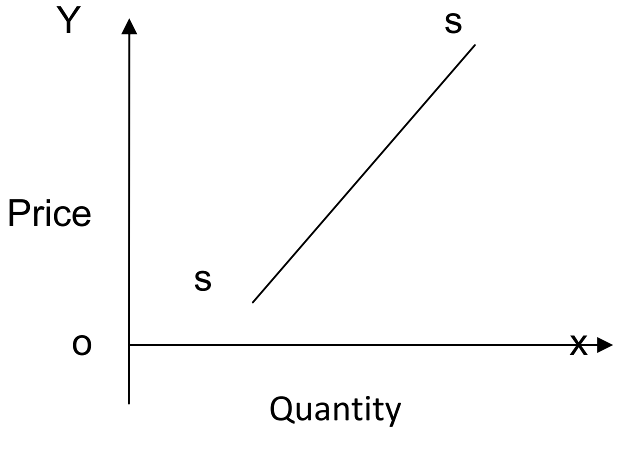

इस बिन्दु को सन्तुलन कीमत (Equilibrium price) का बिन्दु कहा जाता है। चित्र में माँग की पूर्ति शक्तियों द्वारा वस्तु की कीमत का निर्धारण दिखाया गया है। वस्तु की DD वक्र तथा पूर्ति SS वक्र आपस में एक दुसरे को बिन्दु E पर काटते है। बिन्दु E पर निर्धारित कीमत OP (अथवा EQ) संतुलन कीमत है।

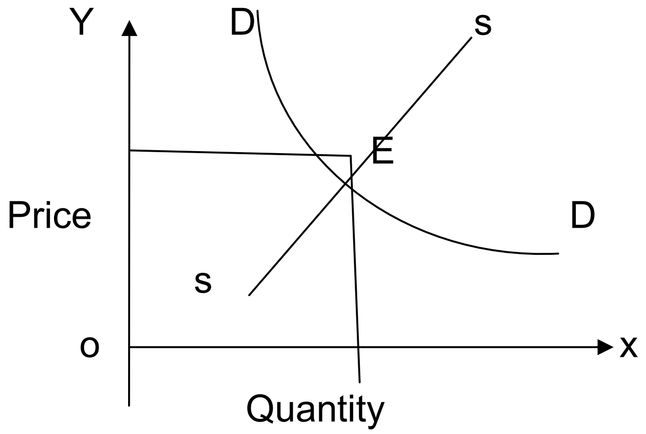

Q.(12) If national income is Rs.50 crores and saving Rs.5 crores, Find out average propensity to consume When income rise to Rs.60 crores and saving to Rs.9 crores. What will be the average propensity to consume and the marginal propensity to save ?

यदि राष्ट्र आय रू. 50 करोड तथा बचत रू. 5 करोड हो तो औसत उपभोग प्रवृति क्या होगी ? यदि आय बढकर रू. 60 करोड तथा बचत बढकर रू. 9 करोड हो जाए तो औसत उपयोग प्रवृति तथा सीमान्त उपयोग प्रवृति ज्ञात कीजिए।

$$Y = C + 5$$

$$50 = C + 5$$

$$C = 50 - 5 = 45$$

$$APC = \frac{C}{Y}$$

$$= \frac{45}{60} = 0.9$$

$$\therefore \triangle Y = 60 - 50 = 10$$

$$\triangle S = 9 - 5 = 4$$

$$\triangle C = \triangle Y - \triangle S$$

$$= 10 - 4 = 6$$

Hence in second situation

C

$$APC = \frac{}{Y}$$

$$= \frac{Y - S}{Y}$$

$$= \frac{60 - 9}{60} = \frac{51}{60} = 0.85 \text{ Ans.}$$

$$MPC = \frac{\triangle C}{\triangle Y}$$

$$= \frac{6}{10} = 0.6 \text{ Ans}$$

Q.(13) What is exchange rate ? Explain the favourable and unfavourable exchange rate.

विनिमय दर क्या है ? अनुकूल एवं प्रतिकूल विनिमय दरों को समझाइए।

Ans:- Foregin Exchange Rate : - Foreign exchange rate refers to the rate at which one unit of currency of a country can be exchanged for the number of units of currency of another country. In other words , it is the price paid in domestic currency in other to get one unit of foreign currency. In other words exchange rate expresses the ratio of exchange between the currencies of two countries. Hence , exchange rate is the price of currency expressed in terms of another currency.

(1) According to sayer , “ the price of currencies in terms of each other are called foreign exchange rate.”

(II) According to Crowther , " The rate of exchange measures number of units of one currency which is exchanged in the foreign market for one unit or another.

Favourable and Unfavourable Exchange Rates : Exchange rate may be favourable or unfavourble.

(A) In Domestic Currency : When exchange rate is experessed in terms of domestic Currency , then falling exchange rate will be favourable and increasing exchange rate becomes unfavourable.

For example , let us assume that 1 Pound = Rs 80. If exchange rate decreases to Rs 78, it will be favourable for India because now we have to give less money for 1 Pound. On the contrary if 1 Pound = Rs 82 , exchange rate will be unfavourable for India because we have to give more money for one pound.

(b) In foreign currency :- When exchange rate is expressed in terms of foreign currency, increasing exchange rate will be favourable for domestic currency and decreasing exchange rate will be unfavourable for the domestic country.

For example: Suppose Rs 1 = 4 cent. If Rs 1 becomes equal to 5 cent, it will be favourable for our country as we will get 5 cent for Rs 1. On the contrary, if exchange rate becomes Rs 1 = 3 cent, then exchange rate will be unfavourable because now less goods could be purchased in lieu of Rs 1.

विदेश विनिमय दर – विनिमय दर वह दर है जिस पर एक देश की एक मुद्रा ईकाई का दूसरे देश की मुद्रा में विनिमय किया जाता है। दूसरे शब्द में, विदेशी विनिमय दर यह बताती है कि किसी देश की मुद्रा की एक ईकाई के बदले में दूसरे देश की मुद्रा की कितनी इकाइयॉं मिल सकती है। इस प्रकार विनिमय दर घरेलु मुद्रा के रूप में दी जानेवाली वह कीमत है जो विदेशी मुद्रा की एक ईकाई के बदले दी जाती है।

सेवर्स के अनुसार, ''चलन मुद्राओं के परस्पर मुल्यों को ही विदेशी विनिमय कहते हैं।''

क्राउथर के अनुसार, ''विनिमय दर एक देश की ईकाई मुद्रा के बदले दूसरे देश की मुद्रा की मिलने वाली इकाइयों की माप है।''

अनुकूल एवं प्रतिकुल विनिमय दरें – विनिमय की दरें अनुकूल या प्रतिकूल हो सकती है।

(अ) घरेलु मुद्रा में – जब विनिमय दर अपनी मुद्रा में व्यक्त की जाती है तो तब गिरती हुई विनिमय दर हमारे अनुकूल होगी और बढती हुई विनिमय दर हमरे प्रतिकूल होगी।

उदाहरण – मान लो, 1 पौण्ड = 80 रू। यदि विनिमय दर घटकर 1 पौण्ड = 78रू हो जाये तो भारत के पक्ष में होगा क्योंकि अब हमें 1 पौण्ड का माल खरीदने के लिए पहले से कम रूपये देने पडेगें। इसके विपरीत, विनिमय दर बढकर। 1 पौण्ड = रू 82 हो जाये तो विनिमय देश के विपक्ष में हो जायेगी क्योंकि अब हमें 1 पौण्ड का सामान क्रय करने हेतु पहले की अपेक्षा अधिक रूपये देने पडेंगे।

(ब) विदेशी मुद्रा – जब विनिमय दर विदेशी की मुद्रा में प्रकट की जाती है तो बढती हुई विनिमय दर स्वदेश के पक्ष में होगी तथा गिरती हुई विनिमय दर स्वदेश के विपक्ष में होगी।

उदाहरण – मान कि रू 1= 4 सेण्ट है। यदि दर रू 1= 5 सेण्ट हो जाये तो यह विनिमय दर देश के पक्ष में होगी क्योंकि अब हम रू 1 के बदले में अधिक सेण्ट या अधिक विदेशी सामान खरीदते हैं। इसके विपरीत यदि विनिमय दर रू 1= 3 सेण्ट हो तो विनिमय दर देश के विपक्ष में होगी क्योंकि अब रू 1 के बदले में कम सेण्ट या विदेशी सामान खरीद सकते हैं।

Q.(14) Explain the various type of taxes.

करों के विभिन्न्न प्रकार बताइए।

Ans:- Types of Taxes

(1) Direct and Indirect Taxes:

(i) Direct Tax : Direct Taxes are those taxes which are paid by the same person whom they are levied. The person on whom direct tax is levied cannot shift its burden to others. It has to be borne by the tax-payer himself. In other words, when impact and incidence of tax fall on the same person, it is called direct tax,

For Example, income tax, property tax, profession tax, wealth tax, etc,are regarded as direct taxes.

(ii) Indirect Tax: Indirect taxes are those taxes whose burden can be shifted i.e. , indirect tax is one which is imposed on one person but it is paid partly or wholly by another person. For example , union excise duties, sales tax, custom duties, etc. When we buy goods from a shopkeeper, we have to pay trade tax with the price of the goods. Shopkeeper pays tax on his sale to the government and diverts it on his consumer. Due to this shifting of the tax, trade tax is called indirect tax.

(2) Proportional, Progressive and Regressive Taxes.

(i) Proportional Tax – Taxes in which the rate of tax remains constant whatever the size of the tax base may be. For example, if the rate of income tax remains 20 percent whatever the size of income is, it will be a proportional tax.

(ii) Progressive Tax- Taxes in which the rate of tax increases with the increases in the size of tax base, are called progressive taxes. In India, income tax is a progressive tax.

(iii) Regressive Tax- When the rate of tax decreases as the tax base increases the taxes are called regressive taxes. The burden of such taxes falls, more heavily on the poor than on the rich.

(3) Specific and Ad- valorem Tax

According to method of assessment, taxes on commodities may be classified into two groups – specific and ad-valorem.

(i) Specific tax – Specific taxes are those taxes which are based on specific qualities or attributes of goods such as weight, number or volume of the commodity taxed. For example, tax on the sugar on the basis of units of weight and on the cloth on the basis of length units are specific taxes.

(ii) Ad-valorem tax – Whereas taxes are levied entirely on the basis of money-value of the goods they are called ad-valorem taxes. For example, import or export duties are lived in terms of value. Imported or exported goods have nothing to do with their size, length and weight.

करों के प्रकार– करों के प्रकार निम्नवत् हैं।

(1) प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर

(i) प्रत्यक्ष कर – प्रत्यक्ष कर वह कर है जो जिस व्यक्ति पर लगाया जाता है, वह व्यक्ति ही उसका भार उठाता है। इस कर को टाला नहीं जा सकता है, न ही इसका भार आंशिक या पूर्ण रूप में किसी अन्य व्यक्ति पर हस्तान्तरित किया जा सकता है। दूसरे शब्द में, जब किसी कर का कराघात तथा करापात एक ही व्यक्ति पर पडता है, तब यह कर प्रत्यक्ष कर कहलाता है। प्रत्यक्ष कर का सबसे अच्छा उदाहरण आयकर है क्योंकि यह जिस व्यक्ति पर लगाया जाता है, वही व्यक्ति उसकी अदायगी करता है। प्रत्यक्ष कर के अन्य उदाहरण है– निगम कर, सम्पत्ति कर, व्यय कर, सम्पदा शुल्क आदि।

(ii) अप्रत्यक्ष कर – जो कर किसी एक व्यक्ति पर लगाये जाएँ परन्तु उनका भुगतान पूर्ण अथवा आंशिक रूप से दूसरे व्यक्ति करें, वे अप्रत्यक्ष कर कहलाते है। आप्रत्यक्ष कर का भुगतान करने का दायित्व तथा कर का मौद्रिक भार भिन्न–भिन्न व्यक्तियों पर पडता है। इस प्रकार उत्पाद कर, सीमा शुल्क, आबकारी, बिक्री–कर इत्यादि अप्रत्यक्ष कर के उदाहरण कहे जा सकते हैं।

(2) आनुपातिक, प्रगतिशील एवं प्रतिगामी कर

(i) अनुपातिक कर – आनुपातिक कर वह कर है जिसमें सभी आय स्तरों पर एक ही दर से कर लगाया जाता है अर्थात् चाहे आय घटे या बढे वस्तु कर की दर एक समान रहती है।

(ii) प्रगतिशील कर – प्रगतिशील कर वह कर है जिसकी दर आय बढने के साथ बढती जाती है। प्रगतिशील कर में कम आय स्तर पर कम दर से तथा अधिक आय स्तर पर अधिक दर से कर आरोपित किया जाता है।

(iii) प्रतिगामी कर – प्रतिगामी कर उस कर को कहते हैं जिसका भार अमीरों की अपेक्षा गरीबों पर अधिक पडता है। जैसे–जैसे कर योग्य आय बढती जाती है, कर की दर घटती जाती है।

(3) विशिष्ट एवं मूल्यानुसार कर

(i) विशिष्ट कर – जब किसी वस्तु पर उसके वनज या आकार के अनुसार अथवा उसकी ईकाई के आकर के अनुसार कर लगाया जाता है तो उसे विशिष्ट कर कहते है। उदाहरण के लिए, जब कपडे. पर उत्पादन कर प्रति मीटर के हिसाब से अथवा चीनी पर उत्पादन कर प्रति क्विण्टल के हिसाब से लगाया जाता है तब इसे विशिष्ट कर कहते हैं।

(ii) मूल्यानुसार कर – जब किसी वस्तु पर कर उसकी कीमत या मूल्य के आधार पर लगाया जाता है तो उसे मूल्यानुसार कर कहते हैं। इस कर के अंतर्गत वस्तु एवं आकार चाहे जो भी हो किन्तु कर उसके मूल्य के अनुसार ही लिया जाता है।

Q.(15) Explain the two sector model of circular flow of income.

आय के चक्रीय प्रवाह के दो क्षेत्रीय मॉडल को समझाइए।

Ans:- Two sector Model of circular Flow of Income:- In two sector Model of circular flow of income, there are only two sectors – 'House hold sector' (i.e. , families) and 'Producer sector' (i.e. , firms) and it deals with circular flow (both money and real flows) between these two sectors.

Assumptions :-

(1) The economy consists of two sectors:

(a) Household Sector :- This sector provides its services to producer sector and consume the goods and services finally produced by producer sector.

(b) Producer Sector :- It produces final goods and services and makes uses of the services of various factor like land, labour, capital, etc.

(2)Economic policies are not influenced by the government.

(3) Economy is 'closed economy' i.e. producer sector makes neither export nor imports and household sector is fully dependent on domestic production.

(4) Household sector spends its entire income and serves nothing.

Structure of Two sector Model :-

Two sector Circular Flow Model

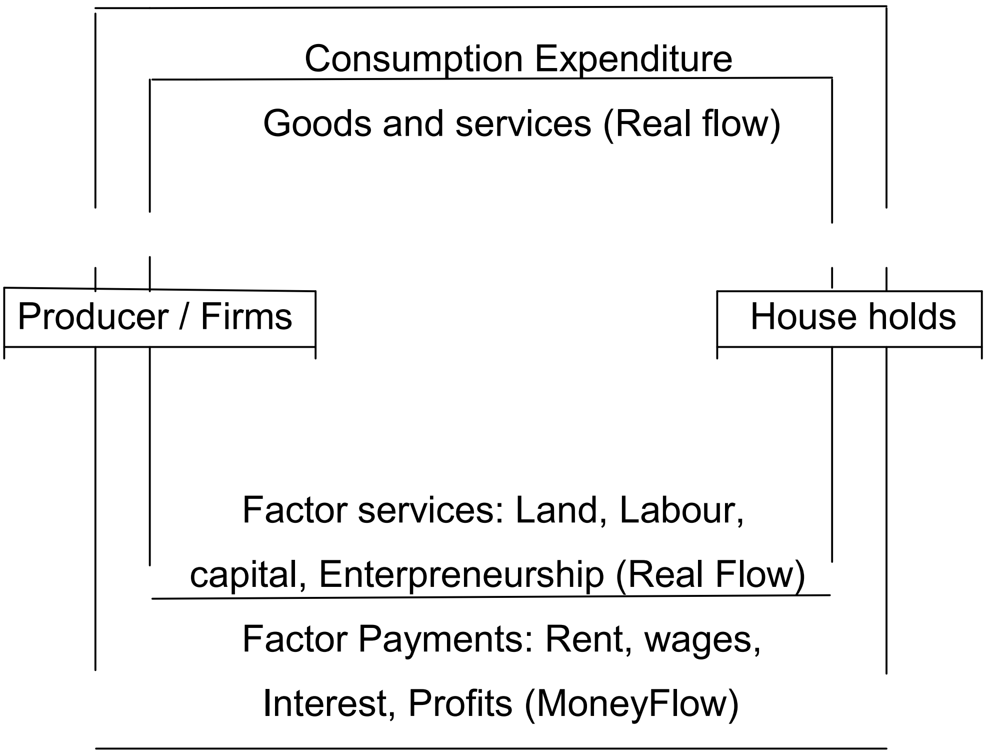

Conclusions of the Model:

Two sector Circular flow Model concludes the following facts:

(1) Total goods and services produced by the producer sector equals the consumption of goods and services made by household sector.

(2) Factor payment made by firms equals the factor income received by household sector.

(3) Consumption expenditure of household sector equals the income of household sector.

(4) Real flow of production and consumption of firms and households is equal to the money flow of income and expenditure of firms and households.

आय के चक्रीय प्रवाह का दो क्षेत्रीय मॉडल – आय के चक्रीय प्रवाह के दो क्षेत्रीय मॉडलों में अर्थव्यवस्था के केवल दो क्षेत्रों – घरेलु क्षेत्र (अर्थात् परिवार) तथा उत्पादक क्षेत्र (अर्थात् फर्म) के बीच होनेवाले चक्रीय प्रवाहों (वास्तविक एवं मौद्रिक) का अध्ययन किया जाता है।

द्विक्षेत्रीय मॉडल की संरचना –

द्विक्षेत्रीय चक्रीय प्रवाह मॉडल

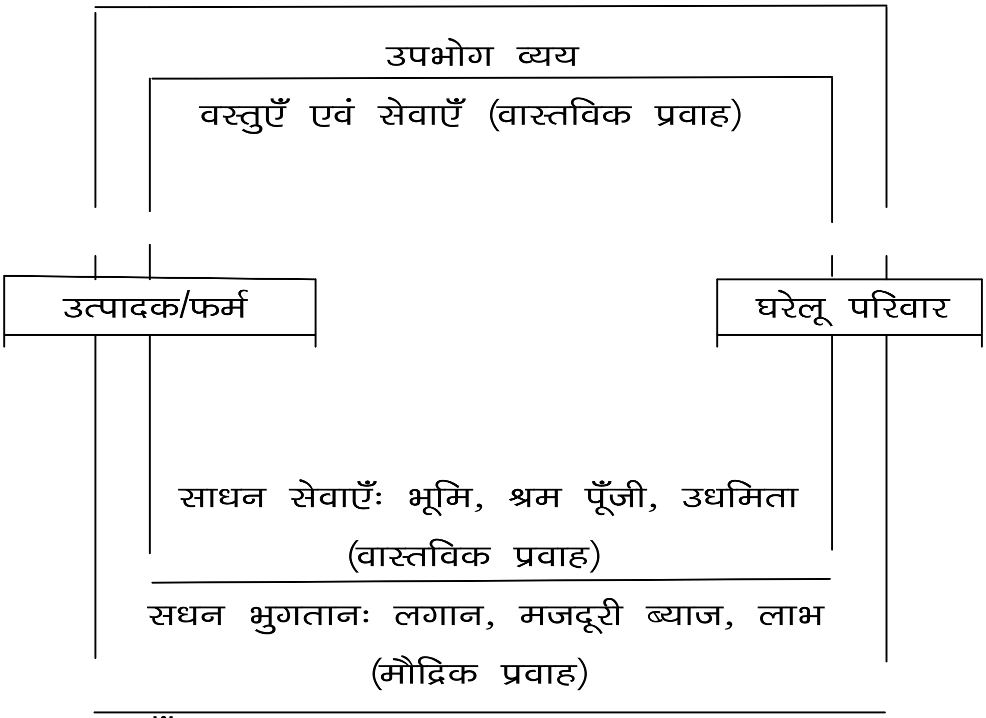

मान्यताएँ –

(1) अर्थव्यवस्था में केवल दो क्षेत्र हैं –

(i) घरेलू क्षेत्र – यह क्षेत्र उत्पादक क्षेत्र को उत्पादन के कारकों की सेवाएँ प्रदान करता है तथा उत्पादक क्षेत्र द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं तथा सेवाओं का उपभोग करता है।

(ii) उत्पादक क्षेत्र – यह क्षेत्र अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं को उत्पन्न करता है। यह क्षेत्र उत्पादन के कारकों की सेवाओं जैसे–श्रम,पूँजी आदि का प्रयोग करता है।

(2) सरकार का आर्थिक क्रियाओं पर कोई प्रभाव नहीं पडता है।

(3) अर्थव्यवस्था एक बन्द अर्थव्यवस्था है अर्थात उत्पादक क्षेत्र द्वारा वस्तुओं का निर्यात या आयात नहीं किया जाता और घरेलू क्षेत्र केवल घरलू उत्पादन पर निर्भर करता है।

(4) घरेलू क्षेत्र अपनी संपूर्ण आय वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय करते हैं अर्थात् कोई बचत नहीं करते।

मॉडल का निष्कर्ष – द्वि–क्षेत्रीय चक्रीय प्रवाह मॉडल के प्रमुख निष्कर्ष निम्नवत् हैं–

(i) फर्मों द्वारा उत्पादित कुल वस्तुएँ तथा सेवाएँ = परिवार क्षेत्र द्वारा किया गया कुल वस्तुओं तथा सेवाओं का उपयोग

(ii) फर्मों द्वारा किया गया साधन भुगतान = परिवार क्षेत्र द्वारा प्राप्त साधन आय

(iii) परिवार क्षेत्र का उपभोग व्यय = परिवार क्षेत्र के आय

;पअद्धफर्मों तथा परिवार क्षेत्र के उत्पादन तथा उपभोग का वस्तविक प्रवाह = फर्मों तथा परिवार क्षेत्र की आय तथा व्यय के मौद्रिक प्रवाह।

MODEL PAPER

d{kk &XII

अर्थशास्त्र (वाणिज्य) – Economics (Commerce)

Set – 5

[k.M & 1 (Section- 1)

oLrfu"B i'u (Objective Type Questions.)

निर्देश & प्रष्न संख्या 1 से 40 तक में चार विकल्प दिए गए है, जिनमें से एक सही है । सही विकल्प को

चुने एंव पत्र में चिन्हित करें,

Instruction :- For questions no. 1 to 40 there are four alternatives of which only one

is correct. Chose the correct alternative and mark it in the answersheet.

---

(1) Which of the following is studied under Micro Economics?

a. Individual Unit b. Economic Aggregate

c. National Income d. None of the above.

व्यष्टि अर्थषस्त्र के अन्र्तगत निम्न में से किसका अध्ययन किया जाता है ?

क. व्यक्तिगत इकाई ख. आर्थिक समय

ग. राष्ट्रीय आय घ. उपर्युक्त में से कोई नही

2. On which base structure of econon 5 oblems has

been installed ?

a. unlimited wants b. Limited Resources

c. Both a & b d. None of the above

निम्न में से किस आधार स्तम्भ पर आर्थिक समस्याओं का ढाँचा खडा है ?

क. असीमित आवष्यकताओं ख. सीमित साधन

ग. क और ख दोनो घ. इनमें से कोई नही

3. Economy may be classified as :

a. Capitalist b. Socialist

c. Mixed d. All of these.

अर्थव्यवस्था को वर्गीकृत किया जा सकता है

क. पूंजीवादी के रूप में ख. समाजवादी के रूप में

ग. मिश्रित के रूप में घ. इनमें से सभी

4. Which is a central problem of an economy ?

a. Allocation of Resources b. optimum utilization of Resources

c. Economic Development d. All of these

अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्या कौन सी है ?

क. साधनों का आवण्टन ख. साघनों का कुशलतम प्रयोग

ग. आर्थिक विकास घ. इनमें से सभी

5. Which economy has a co-existence of Private and Public sector ?

a. Capitalist b. Socialist c. Mixed d. None of these

. निम्न में से किस अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र का सहअस्तित्व होतें है ?

क. पूँजीवादी ख. समाजवादी ग. मिश्रित घ. इनमें से कोई नही

6. The capability of a commodity to satisfy human wants as :

a. Consumption b. Utility c. Quality d. Taste

. किसी वस्तु की मानवीय आवष्यकता को सन्तुष्ट करने की क्षमता है –

क. उपयोग   ख उपयोगिता   ग. गुण   घ. रूचि

7. which element is essential for demand ?

a. Desire to consume   b. Availability of adequate resources

c. Willingness   d. All of these

माँग में कौन सा तत्व निहित होता हैं

क. वस्तु की इच्छा   ख एक निष्चित मूल्य

ग. साघन व्यय करने की तत्परता   घ. उपर्युक्त सभी

8. With a rise in price the demand for ‘griffin’ goods

a. Increase   b. Decreases

c. Remains constant   d. Becomes unstable

मूल्य वृद्धि से ' जिफिन' वस्तुओं की

क. माँग बढ जाती है   ख. घट जाती है

ग. स्थिर रहती है   घ. अस्थिर रहती है

9. The slope of the demand curve of a normal goods is :

a. Negative   b. Positive   c. Zero   d. Undefined

. किसी सामान्य वस्तु के माँग वक्र की ढाल होती है –

क. ऋणात्मक   ख. धनात्मक   ग. शून्य   घ. अपरिभाषित

10. Which of the following is a demand function ?

a. p_x b. $D_x = p_x$ c. $D_x = f(p_x)$ d. none of these

. माँग फलन को निम्नलिखित में कौन सा समीकरण व्यक्त करता है ?

a. p_x b. $D_x = p_x$ c. $D_x = f(p_x)$ d. इनमें से कोई नहीं

11. Long-run production function is related to :

a. Law of demand b. Law of increasing returns

c. Law of returns to scale d. Elasticity of demand

दीर्घकालीन उत्पादन फलन का सम्बन्ध निम्न में किससे है ?

क. माँग के नियम से ख उत्पत्ती वृद्धि नियम से

ग. पैमाने के प्रतिफल नियम से घ. माँग की लोच से

12. The shape of average cost curve is :

a. U-Shaped b. Rectangular Hyperbola shaped

c. Line parallel to x-axis d. None of these

औसत लागत वक्र का आधार होता है।

क. U अक्षर जैसा ख. समकोणीय अतिपरवलय जैसा

ग. X अक्षर जैसा घ. इनमें से कोई नही

13. The basic condition of firm's equilibrium is :-

a. MC=MR b. MR=TR c. MR=AR d. SE=AR

फर्म के संतुलन में प्रथम शर्त है –

a. MC=MR b. MR=TR c. MR=AR d. SE=AR

14. For a firm's equilibrium :-

a. MR=MC b. MR>MC c. MR<MC d. MR=MC=O

फर्म के संतुलन में होता है –

a. MR=MC b. MR>MC c. MR<MC d. MR=MC=O

15. If the price of the goods rises by 40% and supply increase by only 50%,the

supply of goods will be :

a. Highly Elastic b. Elastic

c. Inelastic d. Perfectly Inelastic

यदि किसी वस्तु की कीमत में 40% की वृद्धि हो परंतु पूर्ति में केवल 15% की वृद्धि हो ऐसी वस्तु की पूर्ति होगी ?

क. अत्यधिक लोचदार ख. लोचदार

ग. बेलोचदार घ. पूर्णतः बेलोचदार

16. When supply increases more with a result of small increase in price, the nature of supply will be :

a. Elastic b. Inelastic

c. Perfectly Elastic d. Perfectly Inelastic

जब कीमत में थोडा सा परिवर्तन होने पर पूर्ति में ज्यादा वृद्धि हो जाए तो पूर्ति का स्वरूप निम्नलिखित में कौन सा होगा ?

क. लोचदार ख. बेलोचदार

ग. पूर्ण लोचदार घ. पूर्ण बेलोचदार

17. Who gave the concept of 'Time Element' in price determination process ?

a. Ricardo b. Walras c. Marshall d. J.K.Mehta

निम्नलिखित में किसने कीमत निर्धारण प्रक्रिया में समय तत्व का विचार प्रस्तुत किया ?

क. रिकार्डो ख. वालरस ग. मार्षल घ. जे॰के॰मेहता

18. The price of goods in perfect competition is determined by :

a. Bargaining b. Production cost

c. Marginal utility d. Demand and supply

पूर्ण प्रतियोगिता में किसी वस्तु का मूल्य निर्धारित होता है

क. मोल भाव द्वारा ख. उत्पादन लागत से

ग सीमांत उपयोगिता द्वारा घ. मांग एवं पूर्ति द्वारा

19. Who said , "Price is determined by both demand and supply forces"?

a. Javons b. Walras c. Marshall d. None of the above

निम्नलिखित में किसके अनुसार किसी वस्तु की कीमत मांग और पूर्ति की शक्तियो द्वारा निर्धारित होती है ?

क. जेवन्स ख. वालरस ग. मार्शल घ. इनमें से कोई नही

20. Which is a reason of change in demand ?

a. Change in consumer's income

b. Change in prices of related goods.

c. Population increase d. All the above

मांग में परिवर्तन के निम्नलिखित में कौन से कारण है ?

क. उपभोक्ता की आय में परिवर्तन ख. संबद्धित वस्तुओं की कीमत मे परिवर्तन

ग. जनसंख्या वृद्धि घ. उपर्युक्त सभी

21. Which determines the equilibrium price ?

a. Demand b. Supply

c. Both (a) and (b) d. None of the above

साम्य कीमत का निर्धारण निम्न में किसके द्वारा स्थापित होता है ?

क. मांग ख. पूर्ति

ग. क और ख दोनो घ. इनमें से कोई नही

22. Which one of the following is included in flow ?

a. Consumption b. Investment

c. Income d. All the above

प्रवाह के अन्तर्गत निम्नलिखित में कौन शामिल है।

क. उपभोग ख. निवेष ग. आय घ. उपर्युक्त सभी

23. Which of the following is included in real flow ?

a. Flow of Goods b. Flow of Services

c. Both a and b d. None of the above

.

वास्तविक प्रवाह के अन्तर्गत निम्नलिखित में कौन शामिल है।

क. वस्तुओं का प्रवाह ख. सेवाओं का प्रवाह

ग. क और ख दोनो घ. इनमे से कोई नही

24. Which services are provided by families to a firm ?

a. Land b. Labour

c. Capital and Enterprises d. All the above

परिवार फर्मो को निम्नलिखित में कौन सी सेवाएँ प्रदान करते हैं ?

क. भूमि ख. श्रम ग. पूँजी और उधम घ. उपर्युक्त सभी

25. Which one is included in three-sector model ?

a. Family b. Firm c. Government d. All the above

तीन क्षेत्रीय मॉडल में निम्नलिखित में कौन शामिल है ?

क. परिवार ख. फर्म ग. सरकार घ उपर्युक्त सभी

26. What are the necessary conditions of Barter's system ?

a. Limited needs b. Limited exchange area

c. Economically backward society d. All the above

वस्तु विनिमय प्रणाली की आवष्यक शर्तों कौन सी है ?

क. आवष्यकताओं का सीमित होना ख. सीमित विनिमय क्षेत्र

ग. आर्थिक रूप से पिछडा समाज घ. उपर्युक्त सभी

27. Which one is included in the primary function of money ?

a. Medium of Exchange b. Measure of value

c. Both a and b d. Store of value

मुद्रा के प्राथमिक कार्य के अन्तर्गत निम्नलिखित में किसे शामिल किया जाता हैं ?

क. विनिमय का माध्यम ख. मूल्य का मापक

ग. क और ख दोनो घ. उपर्युक्त सभी

28. Which one is the bank of the public ?

a. Commercial bank b. Central bank

c. Both a and b d. None of the above

जनता का बैंक कौन सा है ?

क. व्यापारिक बैंक ख. केन्द्रीय बैंक

ग. क और ख दोनो 　　घ इनमें से कोई नही

29. Central bank controls credit through :

a. Bank rate 　　b. Open market operations

c. CRR 　　d. All the above

केन्द्रीय बैंक शाखा नियंत्रण करती हैं–

क. बैंक दर के जरीये 　　ख खुले बाजार प्रक्रिया के जरीये

ग सी॰ आर॰ आर॰ के जरीये 　　घ इनमें से सभी

30. Which of the following issue paper currency in the country ?

a. Commercial bank 　　b. Central bank

c. World bank 　　d. Industrial bank

देष का कागजी नोट जारी करने का कार्य कौन करता है?

क. व्यवसायिक बैंक 　　ख. केन्द्रीय बैंक

ग. विष्व बैंक 　　घ औधोगिक बैंक

31. Banking Ombudsman scheme was announced in the year:

a. 1990 　b. 1995 　c. 1997 　d. 2000

बैंकिंग लोकपाल योजना की घोषणा किस वर्ष की गई –

क. 1990 　ख.1995 　ग.1997 　घ. 2000

32. On which factor Keynesian theory of employment depends ?

a. Affective demand 　　b. Supply

c. Production efficiency 　　d. None of the above

कीन्स का रोजगार सिद्धान्त निम्नलिखित में किस पर निर्भर है ?

क. प्रभावपूर्ण मांग 　ख पूर्ति 　ग. उत्पादन क्षमता 　घ इनमें से कोई नही

33. Which one is correct ?

a. $K=\frac{1}{MPC}$ b. $K=\frac{1}{MPS}$ c. $K=\frac{1}{1-MPS}$ d. $K=\frac{1}{1+MPS}$

कौन सा कथन सत्य है ?

a. $K=\frac{1}{MPC}$ b. $K=\frac{1}{MPS}$ c. $K=\frac{1}{1-MPS}$ d. $K=\frac{1}{1+MPS}$

34. Multiplier can be expressed as :

a. $K=\frac{\Delta s}{\Delta I}$ b. $K=\frac{\Delta Y}{\Delta I}$ c. K=I-S d. None of the above

गुणांक को निम्नलिखित में किस सूत्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है ?

a. $K=\frac{\Delta s}{\Delta I}$ b. $K=\frac{\Delta Y}{\Delta I}$ c. K=I-S d. इनमें से कोई नही

35. Which of the following causes the appearance of a Trade Cycle ?

a. Deflationary Conditions b. Inflationary condition

c. Both a and b d. None of the above

व्यापार चक्र के उत्पन्न होने के निम्नलिखित में कौन से कारण हैं ?

क. अवस्फीतिक दषाएँ ख. स्फीतिक दषाएँ

ग. क और ख दोनो घ इनमें से कोई नही

36. In the situation of deflationary gap:

a. Demand increases rapidly b. Supply increases rapidly

c. Both demand and Supply are equal d. None of the above

अवस्फीतिक अंतराल की दषायें :

क. मांग मे तेजी से वृद्धि होती है ख. पूर्ति में तेजी से वृद्धि होती हैं

ग पूर्ति और मांग दोनों बराबर होते हैं घ इनमें से कोई नही

37. Which one is a kind of exchange rate ?

a. Fixed exchange rate b. Flexible exchange rate

c. Both a and b d. None of the above

विनिमय दर के निम्नलिखित में कौन से रूप है।

क. स्थिर विनिमय दर ख लोचपूर्ण विनिमय दर

ग. क और ख दोनो घ. इनमें से कोई नही

38. The forms of foreign exchange market is /are :

a. Spot Market b. Forward Market

c. Both a and b d. None of these

विदेषी विनिमय बाजार के रूप हैं

क. हाजिर या चालु बाजार ख वायदा बाजार

ग. क और ख दोनो घ. इनमें से कोई नही

39. Which one is the item of Capital account ?

a. Government Transactions b. Private Transactions

c. Foreign Direct Investment d. All the above

पूंजी खाते के अन्तर्गत निम्नलिखित मे किसे शामिल किया जाता है ?

क. सरकारी सौदे ख निजी सौदे

ग. विदेषी प्रत्यक्ष विनियोग घ. उपर्युक्त सभी

40. Which included in the direct tax ?

a. Income tax b. Gift tax

c. Both a and b d. None of these

प्रत्यक्ष कर के अन्तर्गत निम्न में किसे शामिल किया जाता है ?

क. आय कर ख उपहार कर

ग. क और ख दोनो घ. इनमें से कोई नही

.

MODEL PAPER

Set – 5

Answer:-

1.(d) 2. (c) 3. (d) 4. (d) 5. (c) 6. (b) 7. (d) 8. (a)

9. (a) 10. (c) 11. (c) 12. (a) 13. (a) 14. (a) 15. (c) 16. (a)

17. (c) 18. (d) 19. (c) 20. (d) 21. (c) 22. (d) 23. (c)

24. (d) 25. (d) 26. (d) 27. (c) 28. (a) 29. (a) 30. (b)

31. (b) 32. (a) 33. (b) 34. (b) 35. (c) 36. (d) 37. (c)

38. (c) 39. (d) 40. (c)